रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण: भारतीय मुद्रा का बढ़ता वैश्विक प्रभाव

पिछले तीन दशकों में **भारत की वैश्विक स्तर पर भागीदारी में उल्लेखनीय बदलाव** आया है। इस भागीदारी में आर्थिक सुधारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन तीन दशकों में **व्यापार और निवेश के स्तर पर विश्व के साथ भारत के संबंध मजबूत** हुए हैं। साथ ही, अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम करके राष्ट्रों द्वारा अपनी-अपनी मुद्रा को बढ़ावा देने से **वैश्विक वित्तीय परिदृश्य में भी बदलाव आए हैं।** इन बदलावों के साथ-साथ हालिया भू-राजनीतिक घटनाओं ने भी डॉलर के विकल्प के रूप में मुख्यतः भारतीय रुपये (INR) को अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक पटल पर उभरने के लिए आधार प्रदान किया है।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तलाशने का प्रयास करेंगे:

1. **मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण क्या है?** 2
   1.1. किसी मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए अनिवार्य शर्तें क्या हैं? 2
2. **भारत रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण पर क्यों बल दे रहा है?** 3
   2.1. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण से होने वाले लाभ और उससे संबंधित चुनौतियां क्या हैं? 3
   2.2. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण हेतु भारत ने कौन-सी पहलें शुरू की हैं? 4
3. **भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण के प्रति भारत का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?** 5
   3.1. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीय उपयोग को बढ़ावा देना 5
   3.2. वित्तीय बाजारों को मजबूत करना 5
   3.3. पूंजी खाते का उदारीकरण 6
4. **निष्कर्ष** 7
5. **टॉपिक: एक नज़र में** 8
6. **बॉक्स एवं टेबल्स** 9

1. मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण क्या है?

तेजी से बदल रही वैश्विक अर्थव्यवस्था में, **'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा'** की अवधारणा की महत्ता भी बढ़ रही है।

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एक ऐसी मुद्रा होती है जिसे जारी करने वाले देश के अलावा **विदेशों में भी आर्थिक लेन-देन के लिए इस्तेमाल** किया जाता है। कई देश **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा** को **विदेशी मुद्रा भंडार** के रूप में भी रखते हैं।
- दूसरे शब्दों में, मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण किसी देश की अर्थव्यवस्था का वैश्विक अर्थव्यवस्था से एकीकृत होने के साथ उसकी **मुद्रा की विदेशों में बढ़ती विश्वसनीयता को दर्शाता** है।
- स्थानीय (घरेलू) मुद्रा की तरह, **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा (करेंसी) भी धन (मनी) से जुड़े तीन कार्य** करती है:
  - **विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करना,**
  - **यूनिट ऑफ अकाउंट (वस्तुओं को मुद्रा के मूल्य में व्यक्त करना) के रूप में कार्य करना,** और
  - **स्टोर ऑफ वैल्यू** (मूल्य संचय) के रूप में कार्य करना।

टेबल 1.1 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा की भूमिकाएं

कार्य	क्षेत्रक	
	निजी	सरकारी
'यूनिट ऑफ अकाउंट' के रूप में	इस रूप में मुद्रा का उपयोग विदेशी व्यापार इन्वॉयसिंग (वस्तुओं के मूल्य इत्यादि अभिव्यक्त करने में) और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय उत्पादों (बॉण्ड, सिक्योरिटी इत्यादि) को उस मुद्रा में अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है।	मुद्रा का उपयोग विनिमय दर संबंधों को अभिव्यक्त करने में किया जाता है।
'विनिमय के माध्यम' के रूप में	इस रूप में मुद्रा का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में लेन-देन करने और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय दायित्वों (ऋण आदि) का भुगतान करने के लिए किया जाता है।	विदेशी मुद्रा बाजारों में इंटरवेंशन करेंसी (सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा मुद्रा की खरीद-बिक्री) के रूप में और भुगतान संतुलन के वित्त-पोषण के लिए उपयोग की जाने वाली मुद्रा के रूप में कार्य करती है।
'स्टोर ऑफ वैल्यू' के रूप में	इस रूप में मुद्रा का उपयोग जमा, ऋण और बॉण्ड के मूल्य के रूप में अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है।	मौद्रिक संस्थाएं (केंद्रीय बैंक आदि) अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं को आरक्षित मुद्रा परिसंपत्तियों के रूप में रखती हैं।

- आरक्षित मुद्रा के रूप में रखी जाने वाली मुख्य विदेशी मुद्राएं हैं; **अमेरिकी डॉलर, यूरो, जापानी येन** और **पाउंड स्टर्लिंग।**
- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष** (IMF) की ओर से जारी एक शोध पत्र में कहा गया है कि भारतीय रुपया, ब्राजीलियन रियल, चीनी रेनमिनबी, रूसी रूबल और दक्षिण अफ्रीकी रैंड **उभरते बाजारों की ऐसी मुख्य मुद्राएं हैं जिनमें अंतर्राष्ट्रीयकरण की क्षमता** है।

मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण एक सतत प्रक्रिया है और इसका किसी देश की आर्थिक प्रगति से गहरा संबंध होता है। इसलिए, आपस में जुड़ी हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था की जटिलताओं को समझने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं की भूमिका और उनके प्रभावों को समझना आवश्यक है।

1.1. किसी मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए अनिवार्य शर्तें क्या हैं?

मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया तब तेज हो जाती है जब एक देश निम्नलिखित पूर्व-शर्तों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ता है:

- **वैश्विक लेन-देन में व्यापक उपयोग:** ऐसी मुद्रा जिसकी हिस्सेदारी वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP), व्यापार और वित्त में अधिक होती है, वह अधिक उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करती है और **नेटवर्क एक्सटर्नलिटीज** स्थापित करती है। नेटवर्क एक्सटर्नलिटी एक आर्थिक शब्दावली है जो बताती है कि किसी उत्पाद की मांग उस उत्पाद को खरीदने वाले अन्य लोगों की मांग पर कैसे निर्भर होती है।
- **मुद्रा की परिवर्तनीयता और पूंजी खाते की मुक्त परिवर्तनीयता के लिए विश्वसनीय प्रतिबद्धता:** यह लेन-देन की लागत को कम करने तथा मुद्रा विनिमय को और मजबूत करने के साथ वित्त की आवाजाही को आसान बनाने के लिए आवश्यक है। इससे कई प्रकार के वित्तीय उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं।
- **देश में वित्तीय और विदेशी मुद्रा बाजार स्थिर होने चाहिए:** इससे विदेशी मुद्रा नीतियों की कार्यप्रणाली आसान हो जाती है और मुद्रा जोखिमों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने में मदद मिलती है। साथ ही, देश की मुद्रा में अभिव्यक्त वित्तीय परिसंपत्तियों के लेन-देन को भी समर्थन मिलता है।
- **अन्य पूर्व-शर्तें:**
  - **देश की मुद्रा को खरीदने या बेचने के लिए** किसी भी संस्था (भारतीय या विदेशी) पर लगे **सभी प्रतिबंधों को हटाना** जरूरी होता है।
  - **विदेशी कंपनियां, वित्तीय संस्थाएं, सरकारी संस्थाएं और व्यक्ति उस देश की मुद्रा** और उसमें अभिव्यक्त वित्तीय उत्पादों/ परिसंपत्तियों को धारण करने में सक्षम होने चाहिए।
  - विश्व बैंक और क्षेत्रीय विकास बैंक जैसे **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान उस देश के बाजार में ऋण-पत्र जारी करने की स्थिति में** हों तथा अपने वित्तीय लेन-देन में उस देश की मुद्रा का उपयोग कर सकते हों।

मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण एक सरल प्रक्रिया होनी चाहिए। यह अर्थव्यवस्था की वित्तीय संरचना में बदलाव की एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए। इससे उस मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्तेमाल और मांग को बढ़ावा मिलता है।

बॉक्स 1.1 मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में वैश्विक अनुभव क्या रहे हैं?

- पिछली शताब्दी के अधिकतर समय में **अमेरिकी डॉलर कई कारणों से प्रभुत्वशाली वैश्विक मुद्रा बनी रही।** इसके लिए कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:
  - अमेरिकी अर्थव्यवस्था बहुत बड़ी है;
  - इसके व्यापार और वित्तीय सेवाओं की पूरे विश्व में पहुंच है;
  - अमेरिकी वित्तीय बाजार मजबूत हैं और उनमें तरलता (मुद्रा प्रवाह) की कमी नहीं है;
  - अमेरिकी अर्थव्यवस्था में लंबे समय से मैक्रो-इकोनॉमिक स्थिरता बनी हुई है और मुद्रा की पूर्ण परिवर्तनीयता कायम है।
- **निम्नलिखित वजहों से भी डॉलर को अपना प्रभुत्व बनाए रखने में मदद मिली है:**
  - इसका कोई **वास्तविक विकल्प नहीं** है।
  - यूरोपीय मौद्रिक संघ अपनी मुद्रा (यूरो) के लिए कॉमन मार्केट नहीं बना पाया है, जिस वजह से यह अपूर्ण रहा है;
  - जापान की घटती आबादी और ऋण-स्थिति की अनिश्चितता से स्थानीय मुद्रा "येन" के प्रभाव में कमी आई है; तथा
  - ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था (और पाउंड) में गिरावट दर्ज की गई है।
- हाल के वर्षों में, **चीनी रेनमिनबी डॉलर के लिए चुनौती बनकर उभर रही है।** हालांकि, इसका भविष्य निम्नलिखित पर निर्भर करता है:
  - अमेरिका और चीन, दोनों में भविष्य की नीतियां;
  - चीनी अर्थव्यवस्था और उसकी वित्तीय प्रणाली की जोखिमों को सहने की दीर्घकालिक क्षमता, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, खुलेपन और स्थिरता प्रदर्शित करने की क्षमता।
- **'स्टोर ऑफ वैल्यू' के रूप में अन्य आकर्षक मुद्राएं हैं:** स्विस फ्रैंक, कनाडाई डॉलर और ऑस्ट्रेलियाई डॉलर। हालांकि, ये मुद्राएं मूल्यवान हैं, लेकिन इनमें **प्रभुत्वशाली वैश्विक मुद्रा बनने की क्षमता नहीं है।**

2. भारत रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण पर क्यों बल दे रहा है?

हाल के वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव आया है। इसे वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के साथ भारत की बढ़ती कनेक्टिविटी के रूप में देखा जा सकता है। निम्नलिखित घटनाक्रम रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति को और बढ़ावा दे रहे हैं:

- व्यापार एवं पूंजी निवेश के मामले में **शेष विश्व के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था** और अधिक जुड़ गई है।
- भारत **विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।** साथ ही, भारत **वैश्विक निवेशकों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य** भी बन गया है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था ने विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान प्रतिकूल वैश्विक घटनाओं को सहने की **उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया।**
- कई देशों के विदेशी मुद्रा भंडार में **अमेरिकी डॉलर की हिस्सेदारी घट** रही है तथा व्यापार संबंधी लेन-देन (इन्वॉयसिंग) और निपटान में **अन्य मुद्राओं का इस्तेमाल बढ़ रहा** है।
- हाल के वर्षों में, कई द्विपक्षीय और क्षेत्रीय **आर्थिक सहयोग समझौते** किए गए हैं। ये समझौते आपसी व्यापार के लिए स्थानीय मुद्राओं में लेन-देन को बढ़ावा दे रहे हैं।

उपर्युक्त घटनाक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न केवल भारत के बढ़ते महत्त्व को दर्शाते हैं, बल्कि एक बहुध्रुवीय वैश्विक अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव का भी संकेत देते हैं। साथ ही, इस बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के साथ भारत के कदम और प्रदर्शन न केवल उसके आर्थिक भविष्य को आकार देंगे बल्कि विश्व की वित्तीय व्यवस्था पर भारत के प्रभाव को भी निर्धारित करेंगे।

2.1. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण से होने वाले लाभ और उससे संबंधित चुनौतियां क्या हैं?

वैसे तो, मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण का मुख्य लाभ देश के निजी क्षेत्रक को मिलता है, लेकिन सरकार को भी कई स्तरों पर लाभ प्राप्त होता है। ये लाभ निम्नलिखित उदाहरणों से काफी स्पष्ट हो जाते हैं:

- **विनिमय दर से जुड़े जोखिम में कमी:** यह वित्तीय बाजार को व्यापक और अधिक मजबूत करता है। साथ ही, घरेलू कंपनियां निर्यात/ आयात के लिए देश की मुद्रा में लेन-देन एवं भुगतान कर सकती हैं। इससे विनिमय दर से जुड़े जोखिम विदेशी कंपनियों या भागीदारों पर स्थानांतरित हो जाते हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों तक पहुंच:** यह **भारतीय कंपनियों और वित्तीय संस्थानों** को विनिमय दर का जोखिम उठाए बिना **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों तक पहुंचना सुगम** बनाता है। साथ ही, यह वित्तीय संस्थानों को लाभ के नए अवसर भी प्रदान करता है।
- **अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण को बढ़ावा:** एक बड़े और अधिक दक्ष वित्तीय क्षेत्रक का विकास पूंजी निर्माण को प्रोत्साहित करता है। इससे भागीदारों के लिए पूंजी की लागत कम हो जाती है।
- **सरकार को अपने बजट घाटे के कुछ हिस्से को वित्त-पोषित करने में मदद मिलती है:** यह विदेशी मुद्रा में डेब्ट इंस्ट्रूमेंट्स जारी करने के बजाय अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारतीय मुद्रा में डेब्ट इंस्ट्रूमेंट्स जारी करके किया जाता है।
- **पूंजी प्रवाह को विनियमित करना:** मैक्रो-इकोनॉमिक स्तर पर, यह **पूंजी आने में अचानक से आने वाली रुकावट को और पूंजी के बाहर जाने के प्रभाव को कम** करता है। साथ ही, इससे विदेशी संप्रभु ऋण को चुकाने की क्षमता बढ़ जाती है।

ऐसी आशंका व्यक्त की गई है कि मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष कई चुनौतियां भी उत्पन्न हो सकती हैं। कुछ मुख्य चुनौतियां निम्नलिखित हैं:

- **विनिमय दर की अस्थिरता:** यह शुरुआत में विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को बढ़ा सकता है।
- **मौद्रिक नीति से संबंधित दुविधा या ट्रिफिन दुविधा:** जब किसी देश को अपनी घरेलू आर्थिक स्थितियों के अनुसार मौद्रिक नीतियों को बनाए रखते हुए वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए अपनी मुद्रा की पर्याप्त आपूर्ति करनी पड़ती है, तब यह दुविधा उत्पन्न होती है।
  - इन दोनों उद्देश्यों को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि वैश्विक मांग को पूरा करने हेतु उठाए गए कदमों से देश की घरेलू अर्थव्यवस्था के समक्ष संकट उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए- मुद्रास्फीति या अस्थिर वित्तीय स्थिति।
- **बाहरी खतरों के प्रभाव में आना:** पूंजी की मुक्त आवाजाही से वित्तीय प्रणाली में अस्थिरता बढ़ सकती है।
- **मैक्रो-इकोनॉमिक और राजनीतिक स्थिरता:** वित्तीय बाजारों के एकीकरण से दीर्घकालिक स्थिरता प्रभावित हो सकती है।
  - मुद्रा की दीर्घकालिक क्रय शक्ति में विश्वास बनाए रखने हेतु ऐसे नीति-निर्माण वाले संस्थान की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाएगी, जिनकी विश्वसनीयता के साथ-साथ मूल्य स्थिरता बनाए रखने का ट्रैक रिकॉर्ड भी अच्छा हो।

2.2. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण हेतु भारत ने कौन-सी पहलें शुरू की हैं?

भारतीय रुपये के वैश्विक स्तर पर उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इनमें से कई प्रयासों में सफलता भी मिली है। कुछ प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं:

- **भारतीय भुगतान अवसंरचना का उपयोग:** भारत ने सिंगापुर के PayNow के साथ UPI के इंटरलिंकेज की शुरुआत की है। **मनी ट्रांसफर सर्विस स्कीम** (MTSS) की शुरुआत की गई है। इसके तहत विदेश में कोई व्यक्ति भारत स्थिति लाभार्थी को धन भेज सकता है। **भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम** (NPCI) अब विदेशों में भी अपनी सेवाओं का विस्तार कर रहा है, आदि।
- **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) स्वैप फ्रेमवर्क:** RBI सार्क सदस्य देशों को तरलता (लिक्विडिटी) की सुविधा प्रदान करता है। इसके तहत तरलता के लिए अनुरोध करने वाले सदस्य देशों के केंद्रीय बैंक अमेरिकी डॉलर और यूरो के साथ-साथ भारतीय रुपये में भी लिक्विडिटी प्राप्त कर सकते हैं।
- **गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) से जुड़ी विकास परियोजनाएं:** ये परियोजनाएं फाइनेंशियल मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर (FMI) व डिपॉजिटरी (CDSL IFSC लिमिटेड) के साथ-साथ बैंकिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की सुविधाएं भी उपलब्ध कराती हैं। इसमें भारत के अधिकांश अग्रणी बैंक भागीदारी कर रहे हैं।
- **भारत-नेपाल धन-प्रेषण सुविधा योजना:** इसकी शुरुआत RBI ने वर्ष 2008 में की थी। इसका उद्देश्य देश में उपलब्ध NEFT प्रणाली का लाभ उठाकर भारत से नेपाल में सीमा पार धन-हस्तांतरण के लिए विकल्प उपलब्ध कराना है।
- **द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था (BSA):** भारत ने जापान के साथ BSA समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत भुगतान संतुलन से जुड़ी किसी समस्या से निपटने के लिए बैकस्टॉप लाइन के रूप में 75 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक के स्थानीय मुद्रा करेंसी स्वैप की व्यवस्था की गई है।
- **भारत और ईरान के बीच द्विपक्षीय व्यापार भुगतान की व्यवस्था:** इस व्यवस्था के तहत, ईरानी निर्यातकों के बिलों का भुगतान करने के लिए भारतीय आयातकों द्वारा ईरानी बैंकों के भारतीय रुपया वोस्ट्रो खातों (Indian Rupee vostro accounts) में 100 प्रतिशत धनराशि भारतीय रुपये में जमा की जाती है।
- **श्रीलंका में भारतीय रुपया एक नामित विदेशी मुद्रा (Designated Foreign Currency)** बन गया है। अब वहां पर इसका प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सीमा-पार बैंकिंग लेन-देन में किया जा सकता है।
  - **भारतीय रुपया को एक नामित विदेशी मुद्रा के रूप में अधिकृत करने से श्रीलंका को निम्नलिखित लाभ होंगे:**
    - » विशेष रूप से लघु व्यापारियों को भारतीय रुपये से संबंधित **सुचारू बैंकिंग लेन-देन की सुविधा प्राप्त होगी,**
    - » व्यापारियों को व्यापारिक लेन-देन करने के लिए अनौपचारिक चैनल्स की बजाय **बैंकिंग चैनल्स का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा,**
    - » व्यापारियों को व्यापार के क्रम में भारतीय रुपये को अमेरिकी डॉलर में और उसके बाद श्रीलंकाई रुपये (LKR) में रूपांतरित करना होता है। इसी तरह श्रीलंकाई रुपये को डॉलर में और फिर भारतीय रुपये में बदलना पड़ता है। इससे लेन-देन की लागत बढ़ जाती है। भारतीय रुपया के 'नामित विदेशी मुद्रा' बनने से **विनिमय संबंधी लागत में कमी** आएगी।
- **एशियन क्लियरिंग यूनियन (ACU):** RBI ने ACU लेन-देन के निपटान के लिए सदस्य देशों की स्थानीय मुद्राओं का उपयोग करने का प्रस्ताव रखा था। इस प्रकार भारतीय रुपये को भी ACU के तहत निपटान संबंधी मुद्राओं में से एक के रूप में शामिल करने का विचार रखा गया था।
- **अन्य:** विदेशों में रुपये मूल्यवर्ग वाले 'मसाला बॉण्ड' जारी करने की अनुमति दी गई है, घरेलू बैंकों को हर समय गैर-निवासियों को स्वतंत्र रूप से विदेशी मुद्रा विनिमय मूल्य की पेशकश करने की अनुमति दी गई है, आदि।

साथ ही, भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए कई 'समन्वित सार्वजनिक नीतिगत' कदम उठाए जा सकते हैं। इस प्रकार, भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण की गति को तेज करने के लिए एक टेम्पलेट या मानकीकृत दृष्टिकोण तैयार करने की आवश्यकता है।

3. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण के प्रति भारत का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?

भारतीय रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण एकल घटना की बजाय एक प्रक्रिया है। इस प्रकार इस दिशा में प्रगति हेतु प्रयास करने, इसका आकलन और निगरानी करने तथा इसके कार्यान्वयन के लिए कुछ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

3.1. भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीय उपयोग को बढ़ावा देना

- **मुद्रा स्वैप और स्थानीय मुद्रा में निपटान (Local Currency Settlement: LCS):** इससे मुद्रा विविधीकरण को बढ़ावा मिलता है। यह स्थानीय मुद्रा को स्थिरता प्रदान करता है और व्यापारिक समुदाय को मुद्रा जोखिम से बचाने के लिए एक विकल्प प्रदान करता है।
- **भारतीय रुपये की पर्याप्त तरलता:** यह भारतीय रुपये में सीमा पार लेन-देन के भुगतान और निपटान की सुविधा प्रदान करेगा। इस प्रकार यह भारतीय रुपये को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लेन-देन निपटान वाली मुद्रा के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सेंट्रल सिक्यूरिटीज डिपॉजिटरी (ICSD) के माध्यम से सरकारी प्रतिभूतियों में लेन-देन का समाशोधन (Clearing):** इससे गवर्नमेंट सिक्योरिटीज (G-sec) बाजार में गैर-निवासियों की भागीदारी को बढ़ाने और G-sec बाजार में निवेशक आधार का विस्तार करने में मदद मिलेगी। इससे सरकार को कम लागत (कम ब्याज) पर उधार मिल पाएगा।
- **सीमा पार लेन-देन के लिए भारतीय रुपया मूल्यवर्ग में भुगतान तंत्र:** यह लेन-देन की लागत को कम करने में मदद करेगा। साथ ही इससे स्विफ्ट मैसेजिंग सिस्टम पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय भुगतान प्रणालियों पर हमारी निर्भरता में भी कमी आएगी।
  - इसके लिए भारत की अत्याधुनिक भुगतान प्रणालियों, जैसे- रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS), नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (NEFT) और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) का लाभ उठाया जा सकता है।
- **कंटीन्यूअस लिंक्ड सेटलमेंट (CLS) का हिस्सा बनना:** भारतीय अर्थव्यवस्था में संवृद्धि और व्यापार में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए, इस बात की आवश्यकता महसूस की गई है कि CLS में प्रत्यक्ष निपटान मुद्रा के रूप में भारतीय रुपये को भी शामिल किया जाए।
  - CLS विदेशी मुद्रा लेन-देन के निपटान के लिए एक वैश्विक प्रणाली है।
- **एक "भारतीय समाशोधन प्रणाली" का निर्माण करना:** यह उन मुद्राओं के लिए बाजार तैयार करके किया जा सकता है, जो स्वतंत्र रूप से परिवर्तनीय नहीं हैं। इससे घरेलू मुद्राओं में निपटान में अधिक दक्षता आएगी।
- **भारतीय रुपया एक व्हीकल करेंसी/ SDR (विशेष आहरण अधिकार) बास्केट के दावेदार के रूप में:** इसे अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ व्यापार संबंधों का विस्तार करके भारतीय रुपये में भुगतान/ निपटान को प्रोत्साहित करके आगे बढ़ाया जा सकता है। इससे भारतीय कंपनियों को कुछ प्रतिस्पर्धी बढ़त मिल सकती है और वे मूल्य-निर्धारक के रूप में कार्य कर सकते हैं। व्हीकल करेंसी अन्य मुद्राओं के मध्य विनिमय का माध्यम के रूप कार्य करती है।

बॉक्स 3.1 विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights: SDR)

- यह 1969 में IMF द्वारा सृजित **अंतर्राष्ट्रीय प्रकार** की एक **आरक्षित मुद्रा** है। यह IMF के सदस्य देशों के मौजूदा धन भंडार के पूरक के रूप में कार्य करता है।
- **इसका मूल्य पांच मुद्राओं के एक बास्केट पर आधारित है। ये पांच मुद्राएं हैं:** अमेरिकी डॉलर (उच्चतम भारांश), यूरो, चीनी युआन, जापानी येन, और ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग (सबसे कम भारांश)।
- इसे **IMF के सदस्य देशों को IMF में उनकी सापेक्षिक हिस्सेदारी के अनुपात में आवंटित** किया जाता है।

3.2. वित्तीय बाजारों को मजबूत बनाना

- FPI की श्रेणी, KYC दस्तावेजों और आधिकारिक तौर पर अन्य वैध दस्तावेजों के प्रमाणीकरण के स्तर पर **RBI एवं SEBI को अपने KYC मानदंडों में तालमेल** स्थापित करना चाहिए।
- **भारत को रुपये के लेन-देन** और रुपये के बाजार-मूल्य निर्धारण (प्राइस डिस्कवरी) के **मुख्य केंद्र** के रूप में **स्थापित करना चाहिए।** बाजार-मूल्य निर्धारण (प्राइस डिस्कवरी) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मुद्रा का मूल्य बाजार द्वारा निर्धारित होता है। यह मूल्य खरीदारों और विक्रेताओं के बीच विनिमय के आधार पर तय होता है।
- **ग्लोबल 24x5 INR मार्केट:** ऑफशोर मार्केट (विदेश) में ग्राहक लेन-देन की सुविधा चौबीसों घंटे प्रदान की जाती है। इसके विपरीत, भारत में इंटर-बैंक फॉरेक्स सुविधा केवल भारतीय शाखाओं के माध्यम से ही प्रदान की जाती है और देश में ये सुविधाएं दिन में केवल सीमित घंटों के लिए हैं।
- वैश्विक बॉण्ड सूचकांकों में भारत सरकार के बॉण्ड्स को भी शामिल किया जाना चाहिए।
  - वैश्विक बॉण्ड सूचकांकों में **विभिन्न उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बॉण्ड शामिल किए जाते हैं।** इसलिए इनमें भागीदारी से देश और उसके स्टॉक की बड़े बाजारों तक पहुंच बढ़ाने में मदद मिलती है। इससे सूचीबद्ध स्टॉक और/या देश में निवेशकों की भागीदारी, विश्वास और तरलता में बढ़ोतरी होती है।

3.3. पूंजी खाते का उदारीकरण

भारतीय रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण और "पूंजी खाता की परिवर्तनीयता" एक-दूसरे के साथ निकटता से जुड़ी हुई हैं और एक-दूसरे पर निर्भर भी हैं।

- **मौजूदा नियमों और दिशा-निर्देशों की समीक्षा करने की आवश्यकता:** नो-योर-कस्टमर (KYC)/एंटी मनी लॉन्ड्रिंग (AML) से संबंधित आवश्यकताओं पर फिर से विचार करना चाहिए। मौजूदा "वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF)" और मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (PMLA) के प्रावधानों से संबंधित बाधाओं को दूर करने के लिए कदम उठाना चाहिए। इससे रुपया आधारित व्यापार लेन-देन को बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- **भारत के बाहर INR खाते:** पूंजी और चालू खाता से संबंधित सभी अनुमत लेन-देन को न केवल ऑनशोर INR खातों के माध्यम से, बल्कि ऑफशोर INR खातों के माध्यम से भी निपटान करने पर विचार करना चाहिए।
- भारतीय बैंकों की ऑफशोर (विदेशी) शाखाओं को **भारतीय रुपये में बैंकिंग सेवाएं** (ऋण, गारंटी, क्रेडिट लाइन आदि) देने की अनुमति दी जानी चाहिए।

पूंजी खाता परिवर्तनीयता (Capital Account Convertibility) क्या है?

- **भुगतान संतुलन (BoP) वस्तुतः** एक निर्धारित अवधि (आमतौर पर एक वर्ष) में किसी देश का शेष दुनिया के साथ **सभी आर्थिक लेन-देन** का रिकॉर्ड होता है। इस लेन-देन में व्यक्ति, व्यवसाय और सरकार, सभी के लेन-देन शामिल होते हैं।
- इस आर्थिक लेन-देन को **मोटे तौर पर दो प्रमुख भागों में विभाजित** किया जाता है- **चालू खाता (Current Account) और पूंजी खाता (Capital Account)।**
  - **चालू खाता** में वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात और आयात, घटक या फैक्टर आय (विदेशी निवेश पर आय- विदेशी निवेशकों को भुगतान) और एकतरफा अंतरण को शामिल किया जाता है।
  - **पूंजी खाता** किसी देश द्वारा धारित **विदेशी आस्तियों और देनदारियों में निवल परिवर्तन** को रिकॉर्ड करता है।
- **परिवर्तनीयता या कन्वर्टिबिलिटी** का आशय **भुगतान संतुलन (BoP) से जुड़े लेन-देन के भुगतान के लिए घरेलू मुद्रा को विदेशी मुद्राओं में और विदेशी मुद्राओं को घरेलू मुद्रा में बदलने या विनिमय** की क्षमता से है।
  - पूंजी खाता परिवर्तनीयता का आशय पूंजी खाता लेन-देन के लिए घरेलू मुद्रा को विदेशी मुद्रा में परिवर्तित करने की क्षमता या स्वतंत्रता से है।
    - » **तारापोर समिति (2006) ने पूंजी खाता परिवर्तनीयता** को "घरेलू वित्तीय आस्तियों को विदेशी वित्तीय आस्तियों में तथा विदेशी वित्तीय आस्तियों को घरेलू वित्तीय आस्तियों में परिवर्तित करने की स्वतंत्रता" के रूप में परिभाषित किया है।
  - चालू खाता परिवर्तनीयता का अर्थ चालू खाता लेन-देन के लिए घरेलू मुद्रा को विदेशी मुद्रा में परिवर्तित करने की क्षमता या स्वतंत्रता है।

पूंजी खाता परिवर्तनीयता क्यों महत्वपूर्ण है?

- मुक्त पूंजी-गतिशीलता या पूंजी बाजार के अंतर्राष्ट्रीयकरण को आमतौर पर **वैश्विक संवृद्धि का इंजन** माना जाता है।
- विशेष रूप से, पूंजी बाजार के **अंतर्राष्ट्रीयकरण के लाभों को व्यापक रूप में स्वीकार** किया जाता है। इन लाभों में शामिल हैं:
  - प्राप्तकर्ता देश की **वित्तीय आस्तियों के लिए निवेशक आधार को व्यापक बनाने में,**
  - वित्तीय बाजार में **तरलता बढ़ाने में,**
  - **बाजार के बुनियादी ढांचे** और **बाजार कार्यप्रणाली के लिए सकारात्मक दबाव** बनाने में, आदि।

पूंजी खाते में पूर्ण परिवर्तनीयता के कौन-कौन से जोखिम हैं?

- वैश्विक आघातों का जोखिम,
- ऋण और आस्तियों का बबल (तेजी से बढ़ते मूल्य),
- पूंजी के अचानक बाहर निकलने से जुड़ी विनिमय दर की अस्थिरता का जोखिम, और
- पुनर्वित्त का उच्च जोखिम।

इन जोखिमों को कैसे प्रबंधित किया जा सकता है?

- एक **अच्छी तरह से विकसित वित्तीय प्रणाली और एक मजबूत बाजार अवसंरचना** विकसित की जानी चाहिए। इसके साथ ही वित्त और जोखिम हस्तांतरण के लिए दक्ष बाजार का निर्माण किया जाना चाहिए।
- **पूंजी प्रवाह की माला और संरचना** तथा अन्य उपायों का प्रबंधन करने के लिए उपयुक्त साधन विकसित किए जाने चाहिए।
- **जोखिम मूल्यांकन पर आधारित पूंजी प्रवाह नियम:** प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सबसे कम जोखिम भरा होता है, उसके बाद इक्विटी निवेश, उसके बाद ऋण पूंजी का स्थान आता है।

बॉक्स 3.2 एक छोटी सी वार्ता! इम्पॉसिबल ट्रिनिटी: पूंजी का मुक्त प्रवाह जोखिम भरा कैसे है?

विनय

अरे विनय, क्या तुमने कभी "इम्पॉसिबल ट्रिनिटी" के बारे में सुना है?

इम्पॉसिबल ट्रिनिटी? वह क्या होता है?

यह एक प्रकार की आर्थिक अवधारणा है। इसके अनुसार, किसी देश में ये तीन चीजें एक साथ नही हो सकती हैः पहला, एक निश्चित विनिमय दर; दूसरा, पूंजी का मुक्त प्रवाह; और तीसरा, एक स्वतंत्र मौद्रिक नीति।

वाह! लेकिन, यह थोड़ा जटिल लग रहा है। इसे मेरे लिए थोड़ा सरल करके बताओ।

ठीक है, तो इसे इस तरह से समझो। कल्पना करो कि तुम्हारे माता-पिता खर्च करने के लिए तुम्हे कुछ पैसे देते हैं और तुम इसे बचाना चाहते हो, निवेश करना चाहते हो और स्वतंत्र रूप से खर्च भी करना चाहते हो। लेकिन तुम ये तीनों चीजें एक साथ नहीं कर सकते। यदि तुम इसे बचाते हो, तो इसे स्वतंत्र रूप से खर्च नहीं कर सकते हो; और यदि तुम इसे स्वतंत्र रूप से खर्च करते हो, तो इसे बचा नहीं सकते हो। क्या तुम्हें समझ आया?

ओह, मैं समझ गया! तो, जैसे, यदि कोई देश एक निश्चित विनिमय दर और पूंजी का मुक्त प्रवाह चाहता है, तो वह अपनी ब्याज दरों को नियंत्रित नहीं कर सकता है?

बिल्कुल सही! उसे अपनी मौद्रिक नीति पर नियंत्रण को कम करना होगा। यह एक तरह की आर्थिक दुविधा की तरह है।

ये तो बड़ा ही दिलचस्प है। तो, कुल मिलाकर यह आर्थिक स्थिरता और स्वतंत्रता के बीच संतुलन की तरह है।

हाँ, और इसे संतुलित करना बहुत मुश्किल हो सकता है। यह एक साथ तीनों को साधने की कोशिश करने जैसा है!

अब मैं समझ गया! इसे समझाने के लिए धन्यवाद, विनी।

कोई बात नहीं, विनय।

विनी

4. निष्कर्ष

आर्थिक उदारीकरण से जुड़े सुधारों के लागू होने के बाद पिछले तीन दशकों में भारत के विदेशी क्षेत्रक ने उल्लेखनीय प्रगति की है। पिछले दशक में विदेशी मुद्रा भंडार, FDI, आयात और निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि इस बदलाव को दर्शाती है। जैसे-जैसे भारत अपनी आर्थिक शक्ति को मजबूत करता जाएगा, उसे इन बदलावों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे में भारतीय रुपये की अंतर्राष्ट्रीय पहचान और इसकी उपयोगिता प्राप्त होने की संभावना में भी वृद्धि होती जाएगी।

टॉपिक: एक नज़र में

रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एक ऐसी मुद्रा होती है जिसे जारी करने वाले देश के अलावा **विदेशों में भी आर्थिक लेन-देन के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा (करेंसी) धन (मनी) से जुड़े तीन कार्य करती है: विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करना, यूनिट ऑफ अकाउंट (वस्तुओं को मुद्रा के मूल्य में व्यक्त करना) के रूप में कार्य करना,** और **स्टोर ऑफ वैल्यू** (मूल्य संचय) के रूप में कार्य करना।
- आरक्षित मुद्रा के रूप में रखी जाने वाली मुख्य विदेशी मुद्राएं हैं; **अमेरिकी डॉलर, यूरो, जापानी येन** और **पाउंड स्टर्लिंग।**

मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लाभ

- **विनिमय दर से जुड़े जोखिम में कमी।**
- यह विनिमय दर का जोखिम उठाए बिना **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों तक पहुंचना सुगम** बनाता है।
- **अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण को बढ़ावा।**
- **किसी देश की सरकार** को विदेशी मुद्रा में डेब्ट इंस्ट्रूमेंट्स जारी करने के बजाय अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में घरेलू मुद्रा में डेब्ट जारी करके **अपने बजट घाटे का एक हिस्सा वित्तपोषित करने** में मदद करता है।
- **मैक्रो-इकोनॉमिक स्तर पर, विदेशी मुद्रा भंडार को बनाए रखने और उस पर निर्भर रहने की आवश्यकता को कम करता है।**

मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की चुनौतियां

- यह शुरुआत में विनिमय दर में **उतार-चढ़ाव को बढ़ा सकता** है।
- **इससे मौद्रिक नीति पर प्रभाव पड़ सकता है,** क्योंकि वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए मुद्रा की आपूर्ति करने और दायित्व और देश की घरेलू मौद्रिक नीतियों के साथ टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसे ट्रिफिन दुविधा कहा जाता है।
- देश के अंदर और बाहर धन के मुक्त प्रवाह के कारण **बाहरी खतरा बढ़ सकता है।**
- **मैक्रो-इकोनॉमिक और राजनीतिक स्थिरता** तथा मुद्रा की दीर्घकालिक क्रय शक्ति में विश्वास बनाए रखना एक चुनौती है।

भारत द्वारा की गई पहल

- **भारत-नेपाल धन-प्रेषण सुविधा योजना।**
- जापान के साथ **द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था (BSA) समझौता।**
- **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) स्वैप फ्रेमवर्क।**
- **भारत और ईरान के बीच द्विपक्षीय व्यापार भुगतान की व्यवस्था।**
- **श्रीलंका में भारतीय रुपया एक नामित विदेशी मुद्रा बन गया है।**
- अन्य क्षेत्राधिकारों तक पहुंच बनाने के लिए **भारतीय भुगतान अवसंरचना का उपयोग।**
- **अन्य:** विदेशों में रुपये मूल्यवर्ग वाले 'मसाला बॉण्ड' जारी करने की अनुमति देना; अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्रों (IFSCs) आदि में रुपये के डेरिवेटिव्स का व्यापार करने की अनुमति देना।

आगे की राह

- मुद्रा स्वैप और स्थानीय मुद्रा निपटान, पर्याप्त INR तरलता, सीमा पार लेन-देन के लिए INR-मूल्यवर्ग में भुगतान तंत्र, एक भारतीय समाशोधन प्रणाली का निर्माण, कंटीन्यूअस लिंक्ड सेटलमेंट (CLS) का हिस्सा बनने जैसी पहलों के माध्यम से **INR के अंतर्राष्ट्रीय उपयोग को बढ़ावा देना।**
- भारतीय रिजर्व बैंक और सेबी के KYC मानदंडों में सामंजस्य स्थापित करके, INR लेन-देन का हब बनाने के लिए भारत को बढ़ावा देना, वैश्विक बॉण्ड सूचकांकों में भारत सरकार के बॉण्ड्स को शामिल करना, आदि के जरिए **वित्तीय बाजारों को मजबूत करना।**
- पूंजी और चालू खाता से संबंधित सभी अनुमत लेन-देन को न केवल ऑनशोर INR खातों के माध्यम से, बल्कि ऑफशोर INR खातों के माध्यम से भी निपटान करने पर विचार करना चाहिए।

6. बॉक्स एवं टेबल्स

टेबल 1.1 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा की भूमिकाएं 2

बॉक्स 1.1 मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में वैश्विक अनुभव क्या रहे हैं? 3

बॉक्स 3.1 विशेष आहरण अधिकार (SDR) 5

बॉक्स 3.2 एक छोटी सी वार्ता! इम्पॉसिबल ट्रिनिटी: पूंजी का मुक्त प्रवाह जोखिम भरा कैसे है? 7

ISHITA KISHORE

GARIMA LOHIA

UMA HARATHI N

39 in Top 50 Selection in CSE 2022

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

ANKITA AGARWAL

GAMINI SINGLA

AISHWARYA VERMA

UTKARSH DWIVEDI

YAKSH CHAUDHARY

SAMYAK S JAIN

ISHITA RATHI

PREETAM KUMAR

दिल्ली

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर